एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सोयाबीन की फसल में कीट व रोगों का प्रबंधन

(*भवानी सिंह मीना[1], मोनिका मीणा[1], मनीषा मीणा[2], पूजा शर्मा[1] एवं रामकेश मीणा[3])
[1]श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
[2]महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
[3]कृषि पर्यवेक्षक, गिराब, बाड़मेर
*125bhawanisingh@gmail.com

प्रायः यह देखा गया है कि सितम्बर माह में सोयाबीन की फसल में कीड़े व बीमारियों के प्रकोप की आशंका अधिक रहती है। अतः फसल की बुवाई से पहले व बुवाई के समय यदि सावधानी रखी जाये तो इन कीड़े–बीमारियों के प्रकोप में कमी लाई जा सकती है। जैसे– खेतों में ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई कर मिट्टी में छुपे कीड़ों के अण्डे, लट आदि को नष्ट करें। कीट–रोग प्रतिरोधी किस्मों की बुवाई करें, फसल चक्र अपनायें, सोयाबीन की उचित पौध संख्या रखने के लिये कतार से कतार की दूरी 30 सेमी एवं बीज की मात्रा 80–100 किलो प्रति हैक्टर रखें।

अभी खेतों में सोयाबीन की फसल लहलहा रही है। खड़ी फसल में कीट–रोगों के नियंत्रण के लिये इन्हें पहचानें एवं सही रोकथाम उपाय अपनाये।

सोयाबीन के प्रमुख कीट

तम्बाकू की इल्ली – सोयाबीन में इस कीट का आक्रमण अगस्त–सितम्बर से फसल पकने तक रहता है। इल्लियाँ जब छोटी होती है जब झुंड में पत्ती की निचली सतह से उत्तकों या पर्ण हरित भाग को खाकर बहुत हानि पहुँचाती है। पत्तियों की मध्य शिरा एवं अन्य शिरायें ही शेष रह जाती है। अत्यधिक प्रकोप की स्थिति में पौधे पत्ती विहीन हो जाते है तो यह पत्तियों के साथ ही फूलों व फलियों को भी खाने लगती हैं। इस स्थिति में पूरी फसल ही नष्ट हो जाती है। पूर्ण विकसित इल्ली 30–40 मिलीमीटर लम्बी गहरे भूरे रंग की होती है। शरीर के दोनों तरफ पीली धारी तथा प्रत्येक खण्ड पर काले धब्बे होते है।

नियंत्रण –

- इस कीट के नियंत्रण के लिये खेत एवं आस–पास की सफाई तथा खरपतवार का प्रबंधन करें। खड़ी फसल में यूरिया का उपयोग नहीं करें।
- 5–7 फेरोमोन ट्रेप प्रति एक हैक्टर क्षेत्र में लगायें तथा उसके नीचे केरोसीन मिले पानी की परात रखें ताकि रोशनी में आकर्षित पतंगे घोल में गिर कर नष्ट हो जायेंगे।
- अण्डों के समूह तथा लार्वा को चुन–चुन कर नष्ट करें।
- चिड़ियों के बैठने के लिये खेतों में खपच्चियाँ लगायें।
- क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें या क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. दवा, 1.5 लीटर दवा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

गर्डल बीटल – यय इस फसल का प्रमुख हानिकारक कीट है। अनुमानतः 25–30 दिन की फसल पर वयस्क मादा पत्तियों के तने या डंठल पर 1 से 1.5 सेमी के फासले पर दो घेरे (कुंडलिया) बनाती है तथा इन घेरों के बीच एक–एक अण्डा देती है। अण्डे 5–6 दिन में पीले हो जाते है तथा इनमें 1.5–2 मिलीमीटर, लम्बाई की पीलं रंग की लट निकलती है। ये लटें डण्ठल का गुदा खाती हुई, तने की तरफ जाकर तने में प्रवेश कर जाती है। इसी प्रकार शाखाओं पर भी घेरे बनाकर अण्डे देती है। पूर्ण विकसित लटें 2–3 सेमी लम्बी व 4–5 मिलीमीटर मोटी होती है। ये गहरे पीले रंग की होती है। तने के गूदे को खाकर खोखला कर देती है, बाद में ये शंकु अवस्था में जमीन में या तने में रहती है। जिनसे वयस्क निकलते है। इनके कारण 20–30 प्रतिशत तक पैदावार में हानि होती है। जल्दी बोयी गई फसल पर इसका प्रकोप ज्यादा होता है।

नियंत्रण –

- पौधे के प्रभावित भागों को खेत से बाहर निकाल कर जला देवें।
- ढ़ेचा की फसल को ट्रेप फसल के रूप में लगायें।
- कीट की रोकथाम हेतु 30–40 दिन की फसल पर डायमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. या मोनोकोटोफॉस 36 प्रतिशत एस.एल. 1 लीटर दवा का प्रति हैक्टर की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। 10–15 दिन बाद छिड़काव दोहरायें।

हरी अर्ध कुण्डलक (ग्रीन सेमीलूपर) – यह इल्ली हरे रंग की होती है तथा अर्ध कुण्डली बनाकर चलती है। इस कीट की मादा पत्तियों पर अण्डे देती है जिससे इल्लियाँ निकल कर पत्ती को खाती है। अधिक प्रकोप होने की दशा में लटें पत्तियों को खाकर छलनी कर देती है।

नियत्रण –

- कीट प्रभावित पौधों को उखाड़ कर जला देवें।
- बी.टी. 127 एस.सी. 3 मिलीमीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
- फसल की 30–35 दिन की अवस्था पर प्रति हैक्टर क्यूनॉलफास 25 ई.सी. या क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 1.5 लीटर दवा का 400–500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार 40–50 दिन की फसल अवस्था पर छिड़काव पुनः दोहराये।
- सोयाबीन की हरी अर्ध कुण्डलक (ग्रीन सेमीलूपर) के नियंत्रण हेतु पर्यावरण सुरक्षित लूफेन्यूरोन 5 ई. सी. दवा 500 मिलीलीटर या डाईफ्लूबेन्जुरॉन 25 डब्ल्यू पी. 350 ग्राम दवा को 400–500 लीटर पानी में घोल बनाकर कीट की प्रारम्भिक अवस्था में छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर 15 दिन बाद छिड़काव पुनः दोहरायें।

बालों वाली लट–फली लगने के समय काली, लाल व भूरे रंग के बालों वाली लट पत्तियों को खाकर छलनी कर देती है तथा पत्तियों को खाकर छलनी कर देती है तथा पत्तियों की नसों का जाल सा रह जाता है शुरू में प्रकोप एक–दो स्थान तक केन्द्रत रहता है जहाँ मादा 500–600 अण्डे देती है। बाद में लटें चारों तरफ फैलकर आकार में बढ़ती हुई पत्तियों को खाती ह जिसका प्रभाव पैदावार पर पड़ता है। शुरू में इसका प्रकोप कुछ स्थानों पर ही होता है। पत्तियाँ सफेद तथा नसें दूर से दिखाई देती है।

नियत्रण–

- कीट प्रभावित पौधों को अण्डों व लटों सहित उखाड़कर नष्ट करें।
- रोकथाम हेतु क्यूनॉलफोंस 1.5 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें।

सोयाबीन के प्रमुख रोग

तना गलन रोग (लक्षण)– बहुत अधिक वर्षा होने व नमी की स्थिति में इस बीमारी के प्रकोप की प्रबल सम्भावनायें होती हैं रोग के लक्षण तने पर दिखाई देते है। तना बीच में से गल जाता है व तने पर सफेद रूई जैसी फफुंद उग जाती है।

रोकथाम

रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट करें, अगले साल उस खेत में सोयाबीन की फसल की बुवाई नहीं करें। रोकथाम हेतु 1.5–2 किग्रा मैन्कोजेब दवा का 600–700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

विषाणु रोग (लक्षण) – इस रोग के कारण पौधों की बढ़वार रूक जाती है तथा वे छोटे रह जाते है। पत्तियों पर उठे हुये व फफोले जैसे भाग उभर आते है। पत्ती सिकुड़ जाती है।

रोकथाम

इसकी रोकथाम हतु डायमिथोएट 1 मिलीलीटर दवा को प्रति लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें एवं आवश्यकतानुसार 15 दिन बाद पुनः छिड़काव करें।

जीवाणु रोग (लक्षण)– यह सोयाबीन का एक प्रमुख रोग है। यह फसल में 40 दिन की अवस्था में लगता है। जो फसल की उपज को 40–50 प्रतिशत तक नुकसान करने की क्षमता रखता है रोग के लक्षण पत्तियाँ पर बहुत छोटे दानों या मुंहासों के रूप में उभरते है। जिनके चारों ओर पीले रंग का घेरा बन जाता है। प्रत्येक दाने के चारों ओर पीले रंग का घेरा बनना रोग का विशिष्ट लक्षण है। पत्ती के पीछे ये दाने खुरदरे व पत्ती से उभरे हुये दिखाई देते है।

रोकथाम

जीवाणु रोग के रोकथाम के लिये 160 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन एवं 1.6 किलो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू पी. दोनों दवाओं को एक साथ पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।